॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

हे प्रातःकाल की अग्नि! तू हवि है : तू हव्य पदार्थों को उत्पन्न करने वाली है। तू हमें हव्य पदार्थों का पान करा, जिससे हम देवता बन जाएँ और देवतागणों के समाज में विराजमान होकर देववाणियों को विचारें। हमारी हर स्थान में देवप्रवृत्ति ही बनी रहे। हे परमात्मन्! तू कल्याण करने वाला है, हमारे कल्याण के लिए तूने नाना सामग्री उत्पन्न की है। हे प्रभु! हम आपसे कल्याण चाहते हैं।

हे इन्द्र! इस संसार को नियम से बनाने वाले! हमारे जीवन को भी नियमित बना। जब हमारा जीवन नियमित होगा, तो हम कुछ कार्य कर सकेंगे। आपने प्रातःकाल में सूर्य को उत्पन्न किया है। इसी प्रकार हे देव! हम उस महान् ज्योति को चाहते हैं जिससे हमारा आत्मिक-कल्याण हो। वह कौन-सी ज्योति है?

वह ज्योति हमारी संध्या की व्याहृतियाँ हैं। जब संध्या की व्याहृतियों को जाना जाता है तो वह संध्या वास्तव में हमारा कल्याण करा देती हैं। जब देवता संध्या के द्वार पर जाते हैं तो संध्या पुकार कर कहती है कि तुम यदि मेरा आदर करोगे, अनुकरण करोगे, तो संसार में देवता बन जाओंगे। यदि तुम मुझे ठुकराओगे तो तुम संसार में ठुकराए जाओंगे।

अतः संध्या के अनुकरण से मनुष्य का हृदय निर्मल और स्वच्छ बन जाता है और जिस मनुष्य का हृदय निर्मल और स्वच्छ बन गया, उसका वास्तव में कल्याण हो गया।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 572 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 647
वर्ष : 48 44 समग्र वर्ष : 55

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. याग के होता	पूज्यपाद-गुरुदेव एवं महर्षि महानन्द मुनि जी महाराज	5-23
4. तपस्वी	पूज्यपाद-गुरुदेव	24-38
6. ऋषियों के उद्‌गार		39
7. दान, पुस्तकों की सूची व पुस्तक प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		40-42

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेद मन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को निरन्तर प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है–

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.) PAN No. – AAAAV7866J
पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली
बैंक खाता नं. 0149000100229389, IFS Code - PUNB 0014900

शृङ्गीऋषि बेवसाईट

Website : www.shringirishi.in
Email : contact@shringirishi.in

॥ ओ३म् ॥

याग के होता

जीते रहो!

देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा अथवा उसके सर्वज्ञता की प्रतिभा का दर्शन होता रहता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप हैं और याग उसका आयतन है उसका गृह है, उसका सदन है। और वह उसी में वास कर रहा है। मैं कई समय से याग के सम्बन्ध में अपने विचार देता रहा। आओ मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि-मुनियों ने इस याग को ब्रह्माण्ड रूपी याग को, मुनिवरों! देखो पिण्ड को वर्णित किया गया। ये कहा कि ''पिण्डम् ब्रव्हा ब्रह्माण्डेः ममत्वम् देवत्वाम् लोकाः।'' मानो ये जो मानव का पिण्ड है। क्योंकि हमारे यहाँ भौतिक विज्ञान और आध्यात्मिक विज्ञान दोनों का अपने में समन्वय किया है। और समन्वय करने का उन्होंने प्रयास किया। और अन्त में बेटा!, उसी चिन्तन में वो मौन हो जाते हैं।

आओ मेरे पुत्रों! आज मैं तुम्हें एक विद्यालय में ले जाना चाहता हूँ। जिस विद्यालय में याग की प्रायः चर्चाएँ होती रही हैं। ये वाक्य हमने पूर्व काल में भी प्रगट किया है। आज भी उन्हीं वाक्यों में तुम्हें हम ले जाना चाहते हैं। जहाँ ब्रह्मचारीगण अपने में मानो देखो, अपनेपन के विचार देते रहे हैं। और आचार्यों से जिज्ञासा प्रगट करते रहे हैं। और वे अपने में उनकी जिज्ञासा को पूर्ण करने वाले सदैव रहे हैं। आओ मुनिवरों! आज मैं तुम्हें महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के विद्यालय में ले जाना चाहता हूँ। जहाँ मुनिवरों! देखो गुरु और शिष्य दोनों में परस्पर प्रायः चर्चाएँ होती

रहती हैं। ये चर्चाएँ मुनिवरों! देखो त्रेता के काल में वशिष्ठ आश्रम में भी और विश्वामित्र आश्रम में भी इस प्रकार की चर्चाएँ होती रही हैं। ज्ञान और विज्ञान की प्रायः मानव अपने में उड़ाने उड़ता रहा है और आध्यात्मिकवाद के ऊपर समन्वय करता रहा है।

महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का उपदेश

आओ मुनिवरों! देखो मैं इसी क्षेत्र में तुम्हें ले जाना चाहता हूँ जहाँ बेटा! देखो महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने आसन पर विद्यमान हैं। क्योंकि विद्यालय में प्रातःकालीन मुनिवरों! देखो याग हुआ और न्योदा में मन्त्रों का उद्गीत गाया गया। सामगान अपने में गाने लगे। **''तपम् हिरण्यम् ब्रव्हे क्रतम दिव्यम् ब्रव्हाः''** वह तप की इसमें विवेचना होने लगी। और तप की चर्चाएँ हमारे यहाँ सर्वोपरि मानी गयी हैं। क्योंकि प्रत्येक मानव को तपस्वी बनना चाहिए। और तप की विवेचना करते हुए ऋषि ने यह कहा है, क्या प्रत्येक मानव को अपनी इन्द्रियों पर संयम करना चाहिए और इन्द्रियों को इन्द्रियों पर जब संयम होता है। जब ''मरस्तम् पवित्राणी भूतम् ब्रव्हे'' जब ये मन की पवित्रता महान् और पवित्रतम् कहलायी जाती है। तो आओ मेरे पुत्रों! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज यह उपदेश दे रहे थे। और प्रातःकालीन अपने ब्रह्मचारियों से उद्गीत गा रहे थे हे ब्रह्मचारियों! तुम्हें महान् और पवित्रत्व में रमण करना है जिससे तुम्हारा मानवीयत्व पवित्रता को प्राप्त होता रहे। और तुम ऊर्ध्वा में गमन करने वाले बनो। लोक-लोकान्तरों में तुम्हारा यातायात होना चाहिए। और तुम मानो देखो, अपने सूक्ष्म, स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीरों में तुम सदैव अपने में यातायात तुम्हारी मानो देखो, स्मरण शक्ति से बना रहे। और उसके ऊपर तुम्हारा आधिपत्य होना चाहिए।

यजमान की जिज्ञासा

मेरे पुत्रों! देखो, ये वाक्य, ये उच्चारण कर रहे थे। इतने में ही ब्रह्मचारियों ने, ब्रह्मचारी उनमें से एक यजमान बना। एक मानो देखो,

जिज्ञासा में परणित हो गया और एक मुनिवरों! देखो उनकी सहायता के लिए विद्यमान हुआ। तो उस समय प्रश्नकर्त्ता ने कहा, जिज्ञासा को ले करके ऋषि के समीप जा करके बोले कि हे प्रभु, ये जो यजमान है, यह उपस्थित है और यह अपने में याग करना चाहता है। हे प्रभु! कितने होता होने चाहिए? मैं होताओं के सम्बन्ध में प्रश्न करना चाहता हूँ। मेरी यह जिज्ञासा बनी रहती है। तो मुनिवरों! देखो ऋषि ने इस सम्बन्ध में उत्तर दिया। ब्रह्मणेः मानो देखो, चौबीस होताओं के द्वारा यजमान याग कर सकता है। चौबीस होता तुम्हारे पवित्रत्व को प्राप्त रहेंगे। उनके द्वारा तुम याग करो। मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने पुनः प्रश्न किया कि महाराज, यजमान याग करना चाहता है, कितने होता होने चाहिए। तो उन्होंने कहा यजमान याग करना चाहता है तो ग्यारह होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। मेरे पुत्रों! उन्होंने जब पुनः यह प्रश्न किया, क्या यजमान याग करना चाहता है, कितने होता होने चाहिए। तो उस समय याज्ञवल्क्य ऋषि महाराज ने कहा, क्या वह नौ होताओं के द्वारा याग कर सकता है। मेरे पुत्रों! पुनः जब यह प्रश्न किया, क्या यजमान याग करना चाहता है, उन्होंने सप्त होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। जब पुनः प्रश्न किया कि महाराज! यजमान याग करना चाहता है भगवन्! वह कितने होताओं के द्वारा याग करे। उन्होंने कहा, पञ्च होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। जब पुनः यह प्रश्न किया कि महाराज, यजमान याग करना चाहता है कितने होता होने चाहिए। तो उन्होंने कहा, तीन होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। मेरे पुत्रों! पुनः जब ये प्रश्न किया कि महाराज, यजमान याग करना चाहता है कितने होता हों। उन्होंने कहा, दो के द्वारा याग होना चाहिए। मेरे पुत्रों! देखो, पुनः जब ये प्रश्न किया तो एक होता रह गया। मुनिवरों! देखो ऋषि अपने में मौन हो गया। मौन हो जाने के पश्चात् ब्रह्मचारी ने पुनः ये प्रश्न किया। क्या महाराज! ये सत्रह होता कौन से हैं जिनके द्वारा यजमान याग करेगा? उन्होंने कहा कि हमारे यहाँ ''यश्स्वतम् ब्रह्मणाः क्रतम् देवत्वाम् लोकाः यश्सञ्जनम् ब्रीहि क्रतम् देवत्वाम्।''

चौबीस होता

मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि ने कहा, हे ब्रह्मचारियों! यजमान यदि अपने होता की गणना करना चाहता है, वह क्यों चाहता है। उन्होंने कहा, प्रभु वो यजमान है और यजमान अपने में याग करने के लिए तत्पर हुआ है। उन्होंने कहा, क्या ये मानो देखो, चौबीस होता कौन-से हैं? बेटा! **दस प्राण हैं और दस इन्द्रियाँ हैं। और मुनिवरों! देखो मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार** ये चतुषः अन्तःकरण कहलाता है। मानो देखो, इनके द्वारा याग होना चाहिए। जब तक हमारे, देखो हम प्राणों के एक-दूसरे के सहयोग को नहीं जान पाएँगे। क्या हमारे शरीर रूप यज्ञशाला में प्राणों का जो सहयोग हो रहा है। मेरे पुत्रों! देखो, प्राण है, अपान है, उदान है, समान है, व्यान है। इन प्राणों का हमें मानो समन्वय करना चाहिए। जैसे देखो नाग, देवदत्त, धनञ्जय, कुरू, कृकल, ये दस प्राण कहलाते हैं। और पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और पाँच कर्मेन्द्रियाँ कहलाती हैं। इसका परस्पर दोनों का जो समन्वय होता है। परस्पर जो एक-दूसरे में, मानो पिरोए हुए रहते हैं इसको हमें जानना है। और जान करके मुनिवरों! देखो मन में पिरोना है। इनके विषय को मन में पिरोना है। मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार। तो मेरे प्यारे! देखो, एक-दूसरे के ये पूरक कहलाते हैं। जैसे परमपिता परमात्मा का यह ब्रह्माण्ड है। यह भी एक-दूसरे में पूरक कहलाया गया है। एक-दूसरे में पिरोया हुआ दृष्टिपात आ रहा है। जैसे बेटा! देखो, ये पृथ्वियाँ हैं और पृथ्वी सूर्य में पिरोयी हुई है। और सूर्य गन्धर्व में पिरोया हुआ है। गन्धर्व में मुनिवरों! देखो ये अमृतम्, आरुणी पिरोया हुआ है और आरुणी, मुनिवरों! देखो वह स्वाति ध्रुव में पिरोया हुआ है। और स्वाति, पुष्प में पिरोया हुआ है और पुष्प, मुनिवरों! देखो वह मूल नक्षत्र में पिरोया हुआ है। और मूल, अचङ्ग में पिरोया हुआ है। अचङ्ग, ब्रीहि मण्डल में पिरोया हुआ है। ब्रीहि मण्डल, मुनिवरों! देखो वातकेतु मण्डल में पिरोया हुआ है। और वातकेतु मण्डल, मुनिवरों! देखो गन्धर्व में पिरोया हुआ रहता है। तो इसी प्रकार मुनिवरों! देखो यजमान की प्रत्येक इन्द्रियाँ और प्राण, मुनिवरों! देखो ये मन, बुद्धि,

चित्त, अहङ्कार एक-दूसरे में पिरोयी हुई रहती हैं। और ये मनस्तत्त्व में पिरोयी रहनी चाहिए। और मन मुनिवरों! देखो प्राण में पिरोया मानो प्राणेश्वर में प्रणव में पिरोया हुआ रहता है। इसी प्रकार मुनिवरो! देखो, बुद्धि अपने में महान् कहलाती है। बुद्धि कहीं रेणुका बन करके रहती है। कहीं बुद्धि बन करके रहती है। कहीं मानो देखो, ऋतम्भरा, प्रज्ञावी और मेधावी बन करके रहती है। तो विचार आता रहता है मेरे प्यारे! सर्वत्र ब्रह्माण्ड की प्रतिभा इसमें सदैव निहित रहती है तो हमें इसे विचार-विनिमय करना चाहिए। यजमान जब याग करने के लिए तत्पर होता है तो उसको बाह्य जगत और आन्तरिक जगत, दोनों को जान लेना चाहिए। कि बाह्य जगत मेरा कैसा होना चाहिए। मेरे पुत्रों! देखो, आन्तरिक जगत मेरा कैसा होना चाहिए। जब तक इन दोनों में समन्वय नहीं होगा, उन्हें मुनिवरों! देखो याजम् भूतम् ब्रह्माः याज्ञवल्क्य मुनि कहते हैं, क्या वो याग में परणित हो जाता है और वो याज्ञिक बन जाता है।

मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया। उन्होंने कहा, सबसे प्रथम मानव को देखो प्राणों को जानना चाहिए। मुनिवरों! देखो, प्राण अपान में, अपान व्यान में और व्यान मानो देखो, समान में और समान व्यान में जब प्रवेश हो जाता है तो मुनिवरों! देखो, उसे नाना प्रकार की प्रतिभाएँ और इस ब्रह्माण्ड की आभाएँ उसे प्राप्त हो जाती हैं। मेरे पुत्रों! देखो, जब प्रत्येक इन्द्रियों का एक-दूसरे में समन्वय हो जाता है। मेरे पुत्रों! देखो, नाग प्राण को जानना बहुत अनिवार्य है। क्योंकि नाग प्राण एक ऐसा है जब मानव को क्रोधाग्नि जागरुक होती है तो नाग प्राण का ऊर्ध्वामुख बन जाता है और वो इस मानवीय जो शरीर है, शरीर रूपी यज्ञशाला है इसमें जो अमृत की उपलब्धि हो रही है वह उस मानो देखो, अमृत को वह विष बना देता है। और विष बना करके मुनिवरों! देखो, वह अमृत को निगल जाता है और विष को वह त्याग देता है। और विष ही मुनिवरों! देखो, किसी-न-किसी रूप में मानो देखो, नाना प्रकार के रुग्णों के रूप में

वह परणित हो जाता है। उसका स्वरूप एक मानो विचित्र बन करके मुनिवरों! देखो, मानव अपने में रुग्णता को प्राप्त हो जाता है।

विचार आता है बेटा! नाग, देवदत्त, धनञ्जय अपने में अपनेपन को ही मुनिवरों! देखो, अपने में वह जो प्राण है, उनको वृत्तियों में रत्त रहना चाहिए। तो मेरे प्यारे! मैं इस विज्ञान में जाना नहीं चाहता हूँ। वह देखो इस विज्ञान में बहुत समय की आवश्यकता है। अब तो मैं तुम्हें केवल परिचय देने के लिए आया हूँ। देखो एक दूसरा प्राण एक-दूसरे की जो माला बना हुआ है। जैसे ये परमात्मा का ब्रह्माण्ड मुनिवरों! देखो, मानव के सदृश दृष्टिपात आता है। इसी प्रकार मुनिवरों! देखो मानव का जीवन भी एक माला के सदृश हमें दृष्टिपात आता है। जैसे मुनिवरों! देखो प्रत्येक ज्ञानेन्द्रियाँ, कर्मेन्द्रियों में पिरोयी हैं, कर्मेन्द्रियाँ मुनिवरों! ज्ञानेन्द्रियों में पिरोयी हुई हैं। एक-दूसरे में मानो देखो, एक-दूसरे का सहयोग हो और शरीर रूपी यज्ञशाला का क्रियाकलाप देखो क्रिया में लाने के लिए उसमें सदैव एक-दूसरे का सहयोग इसी प्रकार मेरे पुत्रों! देखो, मन, बुद्धि ये मन से जकड़ी हुई है। मन से ही अवृत रहती हैं। और मन ही मुनिवरों! देखो इनका एक प्रकार का स्तम्भ कहलाया गया है। जिसमें ये कटिबद्ध हो जाती हैं। वृत्तियों में रत्त हो जाती हैं। मेरे पुत्रों! देखो, **अपने में मन, बुद्धि, चित्त, अहङ्कार ये सर्वत्र एक मन की ही अवस्था कहलाती है।** इसके ऊपर हमें विचार-विनिमय करना है। अपने में धारयामि बनना है। और विचित्रता में मानो अपनी विचित्रता को धारण करने के लिए सदैव मानव को तत्पर रहना है।

सत्रह होता

मेरे पुत्रों! देखो, जब ये वाक्य उन्होंने श्रवण किया तो ब्रह्मचारियों ने ये कहा, हे प्रभु! हम मानो देखो, जब ऋषि-मुनियों के समीप जाते हैं। उससे पूर्व मानो देखो, माता के आङ्गन में मानो पनपते रहते हैं। पितरों के गृह में पनपते रहते हैं। तो मानो देखो, वह हमें इस प्रकार की विवेचना देते रहे हैं। प्रभु! हम ये जानना चाहते हैं, ये जो सत्रह होता हैं, ये कौन-से होते हैं

जिनके द्वारा यजमान को याग करना है। उन्होंने कहा, सत्रह होता वह कहलाते हैं, **दस प्राण हैं, पञ्च तनमात्राएँ हैं, और मन और बुद्धि,** मानो देखो, ये सत्रह होता कहलाते हैं जिनके द्वारा यजमान याग करता है। मेरे पुत्रों! देखो, प्राणेश्वर प्राण को जान करके और प्रकृति के सूक्ष्म स्वरूपों को, पञ्चीकरण को जान करके ही मुनिवरों! देखो अपने सूक्ष्म शरीर को जाना जाता है। क्योंकि ये हमारा स्थूल शरीर है। स्थूल शरीर के साथ में सूक्ष्म शरीर कहलाता है। वह जो सूक्ष्मत्त्व है। मानो देखो, उसका तृतीय स्वरूप जो माना गया है वो कारणमयी माना गया है। मेरे पुत्रों! देखो, **सूक्ष्म शरीर में ये दस प्राण रहते हैं और तनमात्राएँ रहती हैं और मुनिवरों! देखो, ये मन, बुद्धि रहता है।** ये चित्त का मण्डल कहलाता है। ये चित्त में संस्कारों की जो उद्बुद्धता है, वह प्रायः होती रहती है। और वह चित्त का मण्डल कहलाया गया है।

वेद का ऋषि कहता है, हे आचार्यजन!, अमृतम्, हे ब्रह्मचारियों!, मानो देखो, वही सूक्ष्म शरीर के साथ में कारण शरीर होता है। जहाँ ज्ञान और प्रयत्न कहलाता है। और जहाँ ज्ञान और प्रयत्न की दोनों की एकता हो जाती है। उस समय परमपिता परमात्मा का जो ये गर्भाशय है, ये मानो हृदय है। हृदय का हृदय से मिलन हो करके मुनिवरों! देखो, वह मोक्ष की पगडण्डी को अपने में ग्रहण करने लगता है।

विचार आता रहता है कि सूक्ष्म और कारण, ये जो कारण शरीर है, इसकी विवेचना तो मुनिवरों! मैं किसी काल में दे सकूँगा। आज तो केवल परिचय देना है। और वह परिचय केवल ये कि हम अपने में, मानो देखो, अपनेपन को विचारते हुए इस संसार की प्रतिभा में रत्त हो जाएँ। तभी हमारा जीवन मानो सफलता को प्राप्त होता है। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा, क्या ये सत्रह होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। हे यजमान! तुझे सत्रह होताओं के उस मानो देखो, यज्ञमयी स्वरूप को जानना है। जिसको जान करके तेरी अन्तरात्मा पवित्र हो जाए। और तू अन्तरात्मा में ही मानो

देखो, अन्तरात्मा के विज्ञान को अपने में दृष्टिपात करता हुआ तू परमपिता परमात्मा की महती में रत्त हो जाए। ऐसा बेटा! देखो, ऋषि ने कहा। इससे देखो ब्रह्मचारियों ने कहा, हे भगवन्! यजमान कहलाता है। मानो देखो, दस इन्द्रियों को संयम में करने वाला ही याग का अधिकारी होता है। जब तक इन्द्रियों पर अपने पर संयम नहीं होता। और संयम वह मानव करता है जो मुनिवरों! प्रत्येक इन्द्रियों के अव्ययों को जानने लगता है। प्रत्येक इन्द्रियों के विषयों को जान जाता है और उस विषय में साकल्य बनाना जानता है। और जो बाह्य जगत में मुनिवरों! देखो औषधियों का साकल्य बनाना जानता है वो यजमान मुनिवरों! देखो परमगति को प्राप्त हो जाता है। मेरे पुत्रों! देखो, प्रत्येक इन्द्रिय को संयम में लाना, और संयमी वह प्राणी बनता है जो प्रत्येक इन्द्रियों के विषय को जानता है। प्रत्येक इन्द्रियों के विषय को जान करके वह तपस्या में परणित हो जाता है। और वह मुनिवरों! देखो, ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियों को, मानो ज्ञानेन्द्रियों को कर्मेन्द्रियों में समाहित कर लेता है। और ज्ञानेन्द्रियों को मुनिवरो! देखो पञ्चमहाभूतों में समाहित कर लेता है। और पञ्चमहाभूतों को मुनिवरों! देखो मन में समाहित कर लेता है। और मन को प्राण में समाहित कर लेता है। और प्राण और मन को मुनिवरों! देखो जो विचारों में समाहित कर लेता है मेरे प्यारे! वह परमधाम को प्राप्त होने लगता है। **विचार आता रहता है। बेटा! देखो, मन, प्राण और विचार यही तो मुनिवरों! देखो महत्त्वदायक हैं।** इनके द्वारा ही तो यजमान याग करता है। जब उसके मनस्तत्त्व, प्राण में परणित हो जाते हैं। इसीलिए हमारे आचार्यों ने, साधकों ने कहा है, क्या हमें प्राणायाम करना चाहिए। बेटा! देखो, प्राणवेत्ता कुम्भक और पूरक और मुनिवरों! देखो सङ्कल्पमयी प्राणायाम खेचरी मुद्रा में परणित हो जाता है। और भी नाना प्रकार के मानो देखो, इसमें प्रकार माने गए हैं। मैं आज प्राणों के ऊपर विचार देना नहीं चाहता हूँ। हमारे यहाँ बहुत से ऋषि इस प्रकार की विद्याओं में प्राणों के ऊपर अपनी विद्याएँ परणित की हैं। मेरे पुत्रों! मेरी पुत्रियाँ! बहुत-सी ऐसी पुत्रियाँ हुई हैं जिन्होंने मुनिवरों! देखो,

अपने में प्राण को जान करके अपने गर्भ की देखो अन्तर्ग्रह में ये जीव मानो शिशु को लेके इससे वो वार्त्ता प्रगट कर लेती हैं। इस प्रकार की विद्याएँ बेटा!, वैदिक साहित्य में प्राप्त होती रहती हैं। इस प्रकार की विद्याएँ हैं, मुनिवरों! देखो, प्राण के द्वारा, जब प्राण और अपान को मिला करके मानव प्राण की प्रतिष्ठा में प्रविष्ट हो जाता है। मेरे पुत्रों! देखो, उसमें उदान और समान का दोनों की पुट लग जाती है तो मेरे प्यारे! देखो, वह अग्नि में ही प्रविष्ट हो जाता है। उसका मस्तिष्क अग्निमयी बन जाता है।

बेटा! मैं इस सम्बन्ध में विशेष नहीं प्राणायाम करने वाला एक अङ्ग में ही प्राण को ले आता है। और वह मुनिवरों! देखो इतना प्रखर बन जाता है कि प्राणमय, प्राण जहाँ एकत्रित हो जाता है उसमें मेरे पुत्रों! देखो, अमृताम् भूत प्रव्हे, कोई मानो अस्त्रों का प्रयोग भी करे, अस्त्रों से भी मुनिवरों! देखो वह छिन्न-भिन्न नहीं होता है। ऐसा प्राणायाम करने वाले बहुत से महापुरुष हुए हैं।

ग्यारह होता

आज बेटा! देखो, मैं इस विवेचना में जाना नहीं चाहता हूँ। केवल तुम्हें परिचय देना है। एक-एक वाक्य पर बेटा! बहुत समय की आवश्यकता है। विचार केवल ये है कि ऋषि कहता है, क्या मुनिवरों! देखो **पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और पाँच कर्मेन्द्रियाँ** इनके सबके देखो अस्तित्व को जान करके और इनके स्वरूपों को जान करके एक-दूसरे में जो इसकी माला बनाना चाहता है वह **मन** में पिरो देता है। और मन प्राण में प्रतिष्ठित हो जाता है। प्राण, विचार में जब प्रतिष्ठित हो जाता है तो मेरे प्यारे! देखो, मानव अपने में महान् और पवित्रता को प्राप्त हो जाता है।

नौ होता

आओ मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने जब इस प्रकार वर्णन किया तो ब्रह्मचारियों ने कहा, प्रभु! ये वाक्य तो हमारी माता जब हमें लोरियों का

पान कराती थी। हम ही तो चरणों में प्रविष्ट रहते थे। तो ये विवेचना हमें प्रायः देती रहती थी। हम ये जानना चाहते हैं, क्या प्रभु! वह जो नौ अमृतम्, देखो नौ होता कौन-से हैं जिनके द्वारा हम याग करने वाले बने? मेरे प्यारे! ऋषि ने कहा, हे ब्रह्मचारियों! तुम मानो देखो, देखो हमारे इस मानव शरीररूपी यज्ञशाला में मुनिवरों! देखो **नौ द्वार** कहलाते हैं और नौ द्वारों में जो देवता विद्यमान रहते हैं। मानो देखो, नौ द्वारा के ऊपर संयम करता हुआ मानव जब याज्ञिक बनता है तो मेरे पुत्रों! देखो, रूप, रस, गन्ध इत्यादियों को वह अपने में धारयामि बना लेता है। अपने में धारण कर लेता है इन्द्रियों का, क्योंकि वह द्वारों का विषय है। और वह द्वार जब एकाग्रित हो जाते हैं। उन सर्वत्र देवताओं की जो स्थिति है वह हृदय में जब सिमट जाती है तो याज्ञिक याग करने वाला बन जाता है।

सप्त होता

मेरे पुत्रों! देखो, इतने में ऋषि ने कहा प्रभु! ब्रह्मचारियों ने ऋषि से कहा, हे देव! हम मानो विशेष नहीं, क्योंकि जब हम पितरों के मानो देखो, आङ्गन में क्रीड़ा करते रहते थे तो पितर हमें इन्द्रियों के और द्वारों के विषय में मानो देते रहते थे। विचार-विनिमय करते रहते थे। तो हे प्रभु! हम जानना चाहते हैं, क्या वो सप्त होता कौन-से हैं, जिनके द्वारा याग किया जाता है? मेरे पुत्रों! देखो, **ऋषि कहता है, कण्ठ के ऊपर का जो भाग है हमारा। मेरे पुत्रों! ऋषि ने कहा, यही मानो सप्त होता कहलाता है।** चक्षुम् ब्रव्हा, श्रोत्रम् ब्रव्हा। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा, घ्राणाम् स्वस्तम् ब्रव्हे और उन्होंने अमृताम् रसनम् ब्रव्हे क्रतम् दिव्याहम्। ये मानो देखो, सप्त होता कहलाते हैं। इन सप्त होताओं के द्वारा जो याज्ञिक याग करता है मानो वो अपने में महान् और पवित्रता को प्राप्त हो जाता है। विचारवेत्ता ने कहा ब्रव्हे, हे प्रभु! ये सप्त होता तो हमने पूर्व भी काल में श्रवण किए। जब आचार्य के कुल में हम प्रवेश हुए तो आचार्य ने हमें ये निर्णय कराया था कि सप्त होताओं के द्वारा तुम अपने को वशीभूत करो।

और तुम अपने में याज्ञिक बन जाओ। तो मानो देखो, ये आचार्य कुल में हमें प्रवेश कराया गया है।

पञ्च होता

हे प्रभु! हम जानना चाहते हैं, ये पञ्च होता कौन-से हैं जिनके द्वारा याज्ञिक याग करता है? उन्होंने कहा, पञ्च होता, मानो देखो, ये पञ्चम् ब्रव्हा क्रतम् देवाः, हे ब्रह्मचारी! मानो देखो, तीन पदार्थम् ब्रव्हे तीन प्रकार के परमाणु होते हैं। एक गति कराने वाला होता है। एक जिसमें समाहित रहते हैं। मानो देखो, हमारे यहाँ जब विज्ञान में प्रवेश करते हैं तो गुरुत्व, तरलत्व और तेजोमयी ये तीन प्रकार के परमाणु कहलाते हैं। गुरुत्व **पृथ्वी** का स्वरूप है। और तरलत्व **जल** का, आपो का स्वरूप है। और मङ्गलम् ब्रव्हे मानो देखो, तेजोमयी **अग्नि** का स्वरूप माना गया है। इन तीनों प्रकार के परमाणुओं को गति देने वाला **वायु** है और जहाँ ये गतिवान् होते हैं उसे **अन्तरिक्ष** कहते हैं। तो मेरे पुत्रो! देखो, ऋषि ने कहा, क्या सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके भौतिक विज्ञान भी इन्हीं मानो देखो, **पञ्चीकरण** में परणित हो रहा है। तीन प्रकार के परमाणु हैं, गति देने वाला चतुषः है। और पञ्चम् मानो जिसमें ये समाहित हो जाते हैं। तो मुनिवरो! देखो, ऋषि ने कहा धन्य ब्रव्हे, जब ऋषि ने ऐसा उत्तर दिया ब्रह्मचारियों को। तो ब्रह्मचारियों ने कहा, ''सम्भव ब्रव्हे क्रतम् देवत्वाम् लोकाः'' हे प्रभु! हमने ये भी जान लिया।

तीन होता

हम ये जानना चाहते हैं कि वो तीन अभद्रवाहा व त्रितेयिम्..... मानो देखो, तीन होता कौन-से होते हैं। उन्होंने कहा, तीन होता कहलाते हैं **रजोगुण, तमोगुण और सतोगुण**। इन तीनों गुणों के द्वारा, मानव जब इनका एकोकीकरण कर लेता है और सत्यमयी प्रवृत्ति बन जाती है और मानो देखो, जो इससे भी तीनों गुणों को त्याग करके भी ऊर्ध्वा में गमन करता है तो याज्ञिक बनता है संसार में। वह महायाज्ञिक बन करके संसार से पार होने

का प्रयास करता है। ऋषि ने कहा, हे ब्रह्मचारियों! मानो तुमने ये जान लिया कि मैंने इससे पूर्व काल में कहा है, क्या ये तीनों गुण एक-दूसरे के पूरक कहलाते हैं। मानो देखो, सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण एक-दूसरे के पूरक हैं। एक-दूसरे के गृह में समाहित रहते हैं। यदि मानो देखो, सतोगुण, उत्पत्ति के मूल के गृह में नहीं होगा तो उत्पत्ति का मूल ही नहीं बनेगा। और यदि वो रजोगुण की आभा में सतोगुण नहीं होगा तो न्याय भी नहीं बन पाएगा। इसीलिए मानो देखो, रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण एक-दूसरे के पूरक कहलाते हैं। एक-दूसरे में पिरोए हुए हैं। और मानो एक-दूसरे में पिरोए हुए होने से, मेरे पुत्रों! देखो, एक सूत्र के ये तीन मनके कहलाते हैं।

दो होता

ऋषि ने जब ऐसा कहा तो ब्रह्मचारी ने कहा, हे प्रभु! दो होता कौन-से होते हैं? उन्होंने कहा दो होते हैं **प्रकृति और ब्रह्म**। मानो देखो, एक-दूसरे में जब पिरोए जाते हैं तो ये संसार की रचना हो जाती है। मानो ये संसार रूपी यज्ञशाला रचित हो जाती है। और मुनिवरों! देखो, वही तो देखो ब्रह्म है, वही प्रकृति अपने स्वरूप में गमन करती रहती है। मानो जहाँ उग्र क्रिया ब्रह्म की, उग्र क्रिया बनती है तो प्रकृति उसे अपने में धारण कर लेती है। और धारण करते ही मुनिवरों! देखो उत्पत्ति का मूल बन जाता है। तो इसीलिए देखो यजमान अपनी उग्र क्रिया के द्वारा जब याग करता है तो अपने में तेजोमयी बन जाता है।

एक होता

जब एकोकी रह जाता है तो एक ही ब्रह्म की मुनिवरों! देखो एक ही ब्रह्म की उपासना करनी चाहिए। वही हमारा आध्यात्मिकवादी मानो देखो, याग कहलाता है। जब एक ब्रह्म की हम उपासना करते हैं, एक ही ब्रह्म में जब हम रत्त हो जाते हैं तो मानव देखो, अपने में मानवीयता की आभा में रत्त हो जाता है। मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि ने कहा है, हे ब्रह्मचारियों! यदि यजमान

को याग करना है तो एक-दूसरे में पिरोने वाले जगत को विचारना है और जगत के ऊपर अन्वेषण करना है। अनुसन्धान करना है। जिससे मानो देखो, उसका याग सफलता से प्राप्त हो जाए व अपने में सफल हो जाए।

मेरे पुत्रों! देखो, आज का हमारा ये विचार क्या कह रहा है। हम परमपिता परमात्मा की महती को विचारते हुए और परमात्मा के रचाए हुए अमूल्य जगत को विचारते हुए हम इस संसार सागर से पार होने का प्रयास करें। आओ मेरे प्यारे! देखो, आज का विचार हमारा क्या कह रहा है, हम परमपिता परमात्मा की महती और आनन्दमयी मानो देखो, अपने में ही अपने को ले जाएँ, जिससे हमारा जीवन महानता को प्राप्त हो करके और हम देखो नाना प्रकार की घृणात्मक दृष्टि से ऊर्ध्वा को प्राप्त होते हुए एकोकी परमपिता परमात्मा में हमारी निष्ठा होनी चाहिए। ऐसा मुनिवरों! देखो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा।

आओ, मेरे प्यारे! देखो, मैं तुम्हें विशेष विवेचना देना नहीं चाहता हूँ। हमारे यहाँ ऋषि-मुनियों ने याग के ऊपर बेटा! बहुत अनुसन्धान किया है। मेरे पुत्रों! एक-एक विचार को ले करके वर्षों चाहिए विवेचना देने के लिए। कितना विशाल ये ब्रह्माण्ड है। कितनी विशालता है। एक-दूसरे में पिरोया हुआ जगत दृष्टिपात आता है। तो ये ब्रह्माण्ड पिण्ड का मुनिवरों! देखो, ऋषियों ने अपने में सम्मिलन किया है। सम्मिलन होने का प्रयास किया है। और उनको एक-दूसरे में पूरक स्वीकार करके, एक-दूसरे में पिरोने का प्रयास किया है।

मानव की पिपासा

आओ, मेरे पुत्रों! मैं विशेष विवेचना तुम्हें देने नहीं आया हूँ। केवल तुम्हें सूक्ष्म-सा परिचय देने के लिए आया हूँ। और वह परिचय क्या है, मेरे पुत्रों! देखो, हम याज्ञिक बने और याग में अपने को परणित करते चले जाएँ। जिससे मुनिवरों! देखो, यजमान कहता है भगवन्! आपको धन्य है।

आपने हमारी जिज्ञासाओं की पूर्ति की है। आप महान् हैं और वेदज्ञ कहलाते हैं। क्योंकि जो वेदज्ञ होता है वो जिज्ञासा को पूर्ण करता है। क्योंकि प्रश्न करना, जिज्ञासा में रत्त रहना ये दो वाक्य कहलाते हैं। मुनिवरों! देखो प्रश्नकर्त्ता तो अन्त में देखो मौन हो जाता है परन्तु जिज्ञासा जो उत्पन्न होके वो अपने अन्तरात्मा में प्रसन्न हो जाता है। तो विचार-विनिमय हमारा यह कि हम परमपिता परमात्मा की महती को जानते हुए और अपने में मानो याग में प्रवेश हो जाएँ। और आध्यात्मिक मानो देखो, हम याग में परणित हो करके अपने में अपनेपन को ही दृष्टिपात करते रहें। बेटा! ये आज का विचार हमारा क्या कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा की महती और परमपिता परमात्मा का जो ब्रह्माण्ड है जो यज्ञोमयी स्वरूप कहलाता है। हम उस परमपिता परमात्मा की महती को जानते हुए और इस सागर से पार हो जाएँ। आओ, मेरे पुत्रों! देखो, इस संसार सागर से पार होना ही हमारा कर्त्तव्य है। और हमारे यहाँ जितने भी सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके नाना प्रकार के अनुष्ठान होते रहते हैं, नाना प्रकार के याग होते रहते हैं, प्राणायाम जितनी भी साधना है वो सर्वत्र **मानव के अन्तरात्मा में यही पिपासा होती है कि मैं आनन्द को प्राप्त हो जाऊँ।** और मैं आनन्दमयी स्वरूप में ही अपने को परणित कर लूँ। उसी में समर्पित हो करके मानो उसी में अपने को दृष्टिपात करूँ। और मैं उसी में ओझल हो करके अपने में मौन हो जाऊँ। प्रत्येक मानव की एक ही पिपासा रहती है। ये सृष्टि के प्रारम्भ से ही मेरे प्यारे! देखो, क्रम बना हुआ है और ये क्रियाकलापों में ही मानव सदैव तत्पर रहता है।

आओ, मुनिवरों! देखो, आज का विचार क्या, हम परमपिता परमात्मा की महती और उसके आनन्दमयी स्वरूप को अपने में धारण करते हुए इस संसार सागर से पार हो जाएँ। ये है बेटा! आज का वाक्। आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः ये कि हमारे यहाँ याग के ऊपर बेटा! ऋषि-मुनियों ने बड़ा अनुसन्धान किया है और बड़ा गम्भीरता से इसको जाना है। मानो बाह्य जगत को आन्तरिक जगत में और आन्तरिक जगत

को बाह्य जगत में, जगत को अपने में समेट करके ही मुनिवरों! देखो हमारे यहाँ सिद्ध हो जाता है। आओ, मुनिवरों! देखो आज का विचार, अब हमारा ये समाप्त होने जा रहा है। कल मुझे समय मिलेगा तो मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा। ये तो आज मैंने तुम्हें संक्षिप्त-सा परिचय दिया। कहीं से ये प्रेरणा आ रही थी, क्या याग के ऊपर विचार-विनिमय दिया जाए। कई समय से बेटा! याग के ऊपर अपना विचार दिया जा रहा है। **याग ही संसार है और संसार ही याग है।** मेरे पुत्रों! देखो इन दोनों को विचारना है। और विचार करके मुनिवरों! देखो व्यष्टि से समष्टि में प्रवेश करना है। यही हमारा देखो मन्तव्य रहता है। ये है बेटा! आज का विचार, अब समय मिलेगा, तो मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा। अब मेरे प्यारे महानन्द जी! दो शब्द उच्चारण करेंगे–

पूज्य महर्षि महानन्द मुनि जी के उद्‌गार

''ओ३म् यौ शरणम् ब्रह्मणाः देवत्वाम् रथाः।''

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे। क्योंकि वे सूक्ष्म से समय में इतने विशाल विचार देते हैं, जिन विचारों को हम अपने में विचारने लगते हैं तो उसका मार्ग भी हमें प्राप्त नहीं होता। परन्तु जहाँ हमारी ये आकाशवाणी जा रही है, वहाँ एक याग का आयोजन हुआ। और मेरा अन्तरात्मा सदैव याग के ऊपर बड़ा प्रसन्नीय रहता है। और हम ये विचारते रहते हैं कि मध्य काल में महाभारत के काल के पश्चात् कर्मकाण्ड की कुछ युक्तियाँ, कुछ कर्मकाण्ड की युक्तियाँ लुप्त हुई। परन्तु उसके पश्चात् भी जो कर्मकाण्ड है वह अपने में महान् और पवित्र कहलाता है। आज मानो देखो, मेरा जो अन्तर्हृदय रहता है वो यजमान के साथ रहता है। वास्तव में, मैं यह कहा करता हूँ कि ये जो काल चल रहा है, ये वाममार्ग का काल है। और वाममार्ग उस काल को कहते हैं जो मानो उल्टे मार्ग पर गमन कर रहा हो। क्योंकि आधुनिक जो ये जगत चल रहा है, आधुनिक

जगत में जहाँ विज्ञान का दुरुपयोग हो रहा हो। और राष्ट्रवेत्ता भी वाममार्ग की आभा में रत्त हो रहे हों। ऐसे काल में देखो यजमान अपने गृह में जो याग में लगा हुआ है। उसे वाममार्ग की प्रवृत्तियों से ऊर्ध्वा में गमन करना चाहिए और मेरा हृदय यजमान के साथ रहता है।

यजमान का सौभाग्य

मैं यजमान को कहता रहता हूँ कि ऐसे काल में जिस गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता हो और वायुमण्डल में जिसकी सुगन्धी परणित हो रही हो– वेद के पठन-पाठन में, वेद के मन्त्रों के द्वारा आहुति उसमें परणित होती हुई उसमें एक-दूसरे में रत्त रहती हुई रहें। द्यौ और देखो अपने में परणित हो रही हों। हे यजमान! ऐसे यज्ञम् ब्रहा, मेरा अन्तरात्मा यजमान के साथ रहता है। हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे।

महर्षि काण्व का आश्रम

मानो कहीं ये स्थली इतनी विचित्र बन करके रही है। पुरातन काल में जहाँ महर्षि काण्व, काण्व ऋषि का आश्रम रहा है। मानो देखो, उनके यहाँ प्रायः यागों के ऊपर यन्त्रों के द्वारा अनुसन्धान होता रहता था। और वो अनुसन्धान बड़ा विचित्रत्त्व को रहा है। मुझे वो काल, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव के सहित कई समय में मानो उस काल में देखो भ्रमण करने का सौभाग्य भी प्राप्त होता रहा है। और ऋषियों के यहाँ जो विज्ञान और विचार-विनिमय होता रहा है वो बड़ा विचित्र रहा है। काण्व ऋषि के यहाँ, ऐसे-ऐसे यन्त्रों का निर्माण होता रहता था क्या वे मानो देखो, मानव के एकोकीकरण विज्ञान, एकोकीकरण विज्ञान अपने में बहुत समय तक रत्त रहा है। क्या वे देखो यदि भुजा में यन्त्र को स्थित कर दिया जाए तो वो मानो देखो, उसकी भुजा में सुशोभित होने वाला कंगण है। और यदि वही नीचे जब जाए तो वही सर्प की आभा में परणित हो जाता था यन्त्र। तो इस प्रकार के यन्त्रों का निर्माण महर्षि काण्व ऋषि के आश्रम में निर्माणित होता रहा है। आज मैं उनके जीवन के सम्बन्ध में कोई विचार देना नहीं

चाहता हूँ। तो समय-समय पर अपने में तपस्वी महापुरुष अपनी-अपनी प्रतिभा को त्याग करके चले जाते हैं। उनका नामोकरण ही रह जाता है। तो इसीलिए मैं इस सम्बन्ध में कोई विचार देना नहीं चाहता।

आधुनिक काल में विज्ञान के दुरुपयोग के परिणाम

केवल विचार-विनिमय यह कि आधुनिक काल, आधुनिक समय में जहाँ विज्ञान का दुरुपयोग हो रहा हो। जहाँ मेरी पुत्रियों का नृत्य, चरित्र में परणित होने वाला है। चरित्र में परणित हो जाता है तो ये विज्ञान का दुरुपयोग है। विज्ञान अपने में जब सार्थक बनता है जबकि राजा महापुरुष होता है और राजा ये विचारता है कि द्रव्य का लोलुप्ति नहीं बनता। और राष्ट्र में जब द्रव्य की लोलुप्ता आ जाती है वो राष्ट्र का पालन नहीं कर सकता। वह राष्ट्र में अधुरापन रहता है। और उसके राष्ट्र में देखो द्रव्य की लोलुपता के कारण विज्ञान का सदैव दुरुपयोग होता रहता है। और विज्ञान के दुरुपयोग होने से देखो मानव में अधिकार की बलवती हो जाती है। कर्त्तव्यवाद नष्ट हो जाता है। और जहाँ कर्त्तव्यवाद नहीं रहता और विज्ञान, विज्ञान देखो अधिकार की पुकार करने लगता है तो संसार में अब तक कोई किसी के अधिकार को पूर्ण नहीं कर सका है। अन्त में देखो वो ही अधिकार ''अन्तम् ब्रहे'' अन्त में देखो वही अपने में देखो रक्तभरी क्रान्ति में परणित हो जाता है।

मैं बहुत पुरातन काल से अपने पूज्यपाद गुरुदेव से ये प्रगट करता रहा हूँ, क्या जब मानव देखो अश्लील चित्रों को दृष्टिपात करता है और उनको मेरी पुत्रियाँ, छात्र और छात्राएँ सब दृष्टिपात करते हैं तो उनका ब्रह्मचर्य दूषित हो जाता है। और ब्रह्मचर्य दूषित होने से आलस्य और प्रमाद की बलवती हो जाती है। और जब आलस्य और प्रमाद आ जाता है—आलस्य और प्रमाद के आने से ही देखो कर्त्तव्य रह नहीं पाता। और वह अपने कर्त्तव्य को अमृताम् देखो अपने अधिकार की पुकार करने लगता है। और जब अधिकार ही अधिकार चाहने लगता है तो कोई संसार में सृष्टि के प्रारम्भ से वर्तमान के काल तक कोई राजा ऐसा नहीं हुआ जो उनकी इच्छाओं की मानो पूर्ति कर

सके। उनके अधिकार की पूर्ति कर सके। अन्त में वो कर नहीं पाता। राजा और प्रजा दोनों ही रक्तभरी क्रान्ति में परिवर्तित हो जाते हैं।

वाममार्ग

मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा था, क्या हे भगवन्! ये जो काल है ये सुरा, सुन्दरी और द्रव्य का काल कहा गया है। जहाँ देखो द्रव्य एकत्रित करने में मानव लगा हुआ है। वहाँ सुन्दरी में भी परणित हो जाता है। और सुरा में भी परणित हो जाता है। इसीलिए देखो ये काल मैं इसे वाममार्ग कहता हूँ। जहाँ राजाओं का निर्वाचन महापुरुषों के द्वारा, विवेकी और वेद के मर्म को जानने वाले योगियों, विवेकियों के द्वारा होता रहा है वही तो राजा महान् कहलाता है। और जो अपठित समाज के द्वारा राजा का निर्वाचन होगा वह राजा और प्रजा दोनों ही अधोगति को प्राप्त हो जाते हैं। मैंने बहुत पुरातनकाल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव से ये कहा है क्या राष्ट्र का जो निर्वाचन है जब तक वह पवित्र नहीं होगा, तो कर्त्तव्यवाद नहीं आ सकेगा, तब तक ये मानव की प्रवृत्ति ऊर्ध्वा में गमन नहीं कर सकती। इसीलिए मैं आज विशेष चर्चा नहीं, केवल ये कि हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। मानो देखो, ऐसे काल में, वाममार्ग काल में तू अपने गृह में द्रव्य का सदुपयोग कर रहा है। मेरा अन्तरात्मा बड़ा प्रसन्न रहता है। और ''वाममार्ग ब्रहे'' ये जो वाममार्ग की प्रवृत्ति, इसे अपने हृदय से दूरी कर देना चाहिए। **अपने में महान् और पवित्रता को ले करके और कर्त्तव्यवाद की आभा में रत्त रहना चाहिए।** ये आज का हमारा वाक्य अब समाप्त।

यजमान को आशीर्वाद

मेरा विचार सदैव ये रहता है, हे यजमान! हे द्रव्य के सदुपयोग करने वाले द्रव्य! भ्रमण ब्रहे, जहाँ द्रव्य का सदुपयोग होता है अरे! वहीं तो द्रव्य देखो मानव को नहीं त्यागता। और जहाँ द्रव्य का दुरुपयोग होता है वह द्रव्य मानव को त्याग देता है। और वो अधोगति को प्राप्त हो जाता है।

इसीलिए हे यजमान! मेरा अन्तरात्मा सदैव यही कहता रहता है, क्या द्रव्य का सदुपयोग हो। और **याग के माध्यम से अग्नि के मुखारबिन्दु में जो आहुति हुत किया जाता है वही द्रव्य का सदुपयोग है।** इसीलिए हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। ''आनन्दम् ब्रव्हे क्रतम देवाः।'' अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊँगा।

पूज्यपाद-गुरुदेव

मेरे प्यारे! ऋषिवर अभी-अभी मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने बड़े भव्य विचार दिए हैं। उनके विचारों में एक विडम्बना बनी रहती है। क्या राष्ट्र कितना पवित्र होना चाहिए। ये सदैव अपने विचारों में विष्णु राष्ट्र की स्थापना में लगे रहते हैं और ये चिन्तन में यही विचार देते हैं, क्या हमारा जो राष्ट्र है, वो पवित्र बने। मेरे पुत्र! ने अभी-अभी वर्णन किया, क्या कर्त्तव्य का पालन करना चाहिए। क्योंकि मानव जब परमात्मा के आनन्द में और ब्रह्माण्ड को परमात्मा की रचना स्वीकार करता है तो उसी काल में देखो मानव आध्यात्मिकवादी बन करके और भौतिक विज्ञान का वो तिरस्कार कर देता है। मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने भव्य विचार दिए। काण्व ऋषि की उन्होंने चर्चाएँ की हैं। काण्व ऋषि तो बड़े भव्य महान, देखो विज्ञानवेत्ता और तपस्वी कहलाते थे। एक-एक परमाणु, एक-एक लोक-लोकान्तरों के ऊपर वह अध्ययन करते रहते थे। और अध्ययन करते तो यन्त्रों में कैसे क्रियात्मक जीवन बने ऐसे वो लगे रहते थे। तो आज का विचार अब समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन।

ओ३म् देवाः आभ्याम् .....
ओ३म् गन्धर्व ग्रहीताऔ आपः रथम् मन्थाः वायाः।
ओ३म् भद्राणि यश्शचम् रेवम् आपा रथम् मन्थाः वायाः।।

दिनाँक : 11 फरवरी, 1990
स्थान : ग्राम सुवाहेड़ी, बिजनौर

॥ ओ३म् ॥

तपस्वी

जीते रहो!

देखो मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में महामना, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि हमारा वेद मन्त्र कह रहा है **"अग्नम् ब्रह्मणाः व्रतम् देवाः"** क्या वे परमपिता परमात्मा अग्निमयी स्वरूप माने गए हैं। मानो वो तेजोमयी कहलाते हैं। वह अनन्तमयी हैं, क्योंकि अनन्तवाद है। सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक नाना विज्ञानवेत्ता हुए परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नहीं हुआ जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को सीमाबद्ध कर सके। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तवान् हैं और उसका ज्ञान और विज्ञान भी अनन्तमयी माना गया है। क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके मानव अपने में अनुसन्धान करता रहा है और अन्वेषण करता रहा है कि मैं उस प्रभु की अनन्तता को, मैं जानने का प्रयास करूँ। परन्तु वह जानने के लिए तत्पर होता है और विचार-विनिमय करता रहता है। और वह अपने में ही अपनेपन को जब दृष्टिपात करता है तो उसकी अनन्तमयी महिमा, उसका अनन्तमयी ज्ञान और विज्ञान, ये मानव के समीप आता रहा है। क्योंकि मानव अपने सर्वत्र इन्द्रियों का जब अपने में ही स्वरूप को जानने के लिए तत्पर होता है तो वह अनन्तवाद प्रभु की महिमा को वो अपने में ही दृष्टिपात करता रहता है।

आओ मेरे पुत्रों! हमारा वेद मन्त्र हमें क्या कह रहा है। वेद मन्त्र कहता है **"अन्नम् ब्रह्माः क्रतम् देवत्वाम् विष्णुः"** कि वे परमपिता

परमात्मा विष्णु है जो इस संसार का पालन कर रहा है। क्योंकि उसका प्रत्येक जो अप्रतम् में रत्त होने वाला ये जगत है। ये मानो अनन्तमयी दृष्टिपात आता रहता है। आज मैं तुम्हें जहाँ ज्ञान और विज्ञान के क्षेत्र में अथवा उसकी अलौकिकता के क्षेत्र में तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ। क्योंकि वे बड़ी विचित्रताएँ दृष्टिपात आती रहती हैं। आओ मुनिवरों! देखो आज मैं तुम्हें उसी विद्यालय में ले जाना चाहता हूँ जहाँ ऋषि-मुनि अपने में अध्ययन करते रहते थे। और एक-एक वेद मन्त्र के ऊपर अन्वेषण अथवा अनुसन्धान और अनन्तमयी जगत को विचारने के लिए सदैव तत्पर रहे हैं। क्योंकि जब तार्किक अपनी आभा में नियुक्त होता है तो वो दर्शनों को विचारने लगता है और वह मानवीय दर्शनों के ऊपर अपनी आभा में रत्त हो जाता है। तो आओ मुनिवरों! देखो, हमारे यहाँ ऋषि-मुनियों ने अपने में अपनेपन को दृष्टिपात किया है। मुझे वो काल दृष्टिपात आता रहता है जिस काल में बेटा! देखो, ऋषि-मुनि अपने विद्यालयों में ब्रह्मचारियों के समीप विद्यमान हो करके एक-दूसरे की आभा में परणित होते रहे हैं। क्योंकि अपने में जिज्ञासु बनना, ये बड़ी महान् एक उपलब्धि मानी गयी है। क्योंकि जहाँ प्रश्नकर्त्ता है, वहीं, मुनिवरों! देखो, वह जिज्ञासु भी विद्यमान होता रहा है।

विचारों का याग

आओ मुनिवरों! देखो आज मैं तुम्हें महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के विद्यालय में ले जाना चाहता हूँ। जहाँ महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज और ब्रह्मचारीजन अपने में परस्पर विचार-विनिमय करते रहे हैं। मेरे पुत्रों! देखो, प्रातःकालीन आचार्यजन और ब्रह्मचारीजन बेटा! देखो, अपने में याग करते थे। और याग दो रूपों में उपलब्ध होता रहा है। बेटा! एक तो वह याग कहलाता है जो ''विचारार्थम् ब्रह्मा'' जो मेरे पुत्रों! देखो, वेद मन्त्र का उद्गीत गाया जाता है। और एक वह हमारे यहाँ याग माना गया है जो साकल्य के द्वारा सुगन्धी उपलब्ध होती रही है। तो हमारे यहाँ मुनिवरों!

देखो जो विचारों का यज्ञ है, विचारों का जो याग है—जहाँ ब्रह्मचारी और ब्रह्मवर्चोसी विद्यमान हो करके अपने में याज्ञिक बने रहे हैं। और विचार-विनिमय होता रहा है। क्योंकि अपने में अपनेपन की विचारधारा को सदैव अपने में धारण करने का नाम ही मुनिवरों! देखो एक मानवीयत्त्व माना गया है। तो आओ मुनिवरों! देखो आज मैं तुम्हें महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के विद्यालय में जहाँ ब्रह्मचारीजन अपनी जिज्ञासाओं को पूर्ण करते रहे हैं। और आचार्यजन परस्पर देखो उनके विचारों को अपने में ग्रहण करते हुए, अपने में धारयामि बनाते हुए, नाना ऋषि-मुनियों के विचार और उनकी धाराएँ वो वर्णित करते रहते थे। और वेद मन्त्रों की आभा में वो सदैव रत्त रहे हैं।

तपस्वी बनने की प्रेरणा

आओ मुनिवरों! देखो आज मैं तुम्हें ब्रह्मचारीजन और महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज बेटा! एक समय प्रातःकालीन उन्होंने याग किया। और याग के पश्चात्, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने ये कहा, क्या ये जो तुम्हारा परस्पर मानवीयत्त्व और विद्यालय है इस विद्यालय में मानो देखो, तुम महान् बन के और ज्ञान और विज्ञान की उड़ान उड़ने वाला अपने में बेटा! देखो, उड़ाने उड़ता रहा है। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा ''तपम् ब्रह्मणाः तपम् दिव्यम् गतम् ब्रह्मणाः लोकाम्।'' आचार्य ने कहा हे ब्रह्मवर्चोसी तुम्हें तपस्वी बनना है। क्योंकि **तपस्या उसे कहते हैं जो प्रत्येक इन्द्रियों के विषय को, साकल्यों को एकत्रित करने वाला हो।** और वह एकत्रित करके मुनिवरों! देखो, परमात्मा की सृष्टि को निहारता रहे। परमात्मा के जगत को अपने में धारण करता रहे। और उसको निहारते-निहारते हुए अपने में बेटा! मौन हो जाए। क्योंकि परमात्मा का जो अन्तिम चरण है, वह आत्मा का विषय नहीं कहलाता। तो विचार आता रहता है बेटा! ऋषि ने कहा, क्या ''तपम् ब्रह्मणहम् तपम् तर्थयम् ब्रव्हे क्रतम् देवाः''। वह बोले, हे ब्रह्मचारीजनों! देखो ये जो संसार है, ये तपोमयी

माना गया है। प्रत्येक प्राणी संसार का तपायमान हो रहा है। क्योंकि मेरा आचार्य तपता है तो मुनिवरों! देखो ब्रह्मचारी महान् बन जाते हैं। ब्रह्मचारी तपता है तो वो ही आचार्यत्त्व को प्राप्त होता रहता है।

ब्रह्मचारी नचिकेता की जिज्ञासा

मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने कहा, हे ब्रह्मचारियों! एक समय मानो देखो, उद्दालक गोत्र में एक ऋषि हुए हैं। उद्दालक गोत्र के ऋषि ''अमृताम् ब्रह्मणेः व्रतम् देवाः''। मेरे प्यारे! देखो, अपने में अपनेपन को विचारते रहे। और उसमें मानो विश्वसर्वा थे। और विश्वसर्वा के पुत्र का नाम बाल्य नचिकेता था। वही नचिकेता देखो एक समय अपने पिता की आज्ञा पा करके और पिता ने जब ये विचारा कि ब्रह्मचारी अपने में ऊर्ध्वा को गमन कर रहा है। उसने कहा, हे ब्रह्मचारी! ब्रह्मणेः क्रतम् देवाः, ब्रह्मचारी ने कहा हे प्रभु! आपने जो अभी-अभी याग किया है उस याग में बहुत-सी अशुद्धियाँ रह गयी हैं। हे प्रभु! मैं आपकी सम्पदा हूँ और यह गृह भी आपकी सम्पदा है। आप मुझे किसे दोंगे। उन्होंने कहा, हे नचिकेता! मैं तुम्हें मानो मैं तुझे मृत्यु को दूँगा। अब बाल्य ने कोई अपराध तो किया नहीं था। परन्तु देखो वह वहाँ से बोले ब्रहा, वह अपने में मौन हो गए। और जब साँय काल को ऋषि अपने आसन में, अपने कक्ष में विश्राम कर रहे थे। तो उन्होंने, बाल्य नचिकेता ने उनके चरणों को स्पर्श करके कहा, हे प्रभु! आप महान् हैं। आप पवित्रतम् हैं और मेरे पितर कहलाते हैं। हमारा जो गोत्र है ये मानो देखो, उद्दालक गोत्र कहलाता है। और उद्दालक गोत्र में नाना ऋषि हुए हैं और नाना मानो हजारों इस संख्या में मानो देखो, वंशलज रहे हैं। उनमें कोई भी मिथ्यावादी नहीं हुआ है। इसीलिए आपने, आपको भी मिथ्या में नहीं उच्चारण करना है और मुझे मृत्यु को प्रदान कर दीजिए। तो मैं मृत्यु को प्राप्त हो जाऊँगा।

यमाचार्य के तीन वर

मेरे प्यारे! देखो, जब आचार्य ने, ''ब्रह्मणेः क्रतम् देवत्वाम् ब्रह्माः'' वह गृह में थे नहीं। उनकी देवी ने कहा, हे ब्रह्मचारी! उद्दालक, आओ तुम

विराजो अपने आसन पर। मानो कुछ जल अन्न का पान करो। भगवन्! देखो यमाचार्य भी कहीं से भ्रमण करके तुम्हारे समीप आएँगे। उन्होंने कहा, ब्रह्मणे क्रतम देवाः हे माता, जब तक मैं आचार्य के दर्शन नहीं कर पाऊँगा, मृत्यु को प्राप्त नहीं हो जाऊँगा, जब तक मानो मैं दर्शनाम् भूतम् ब्रह्माः, मैं मानो देखो, द्वार पर ही विराजमान रहूँगा। वह अपने में द्वारपाल बने रहे। उस समय मानो तीन रात्रि और तीन दिवस हो गए ब्रह्मचारी को, न अन्न का पान किया है, न जल का पान किया है। वह अपने में मानो देखो, द्वारपाल बने रहे। और द्वारपाल बन जाने के पश्चात् जब यमाचार्य कहीं से भ्रमण करते हुए, मेरे पुत्रों! देखो, अपने गृह में प्रवेश हुए, अपने गृह में गमनम् प्रव्हा, देखो देवी ने कहा, हे प्रभु! अमृताम् देवत्वाम् लोकाम् हिरण्यम् ब्रव्हाः हे प्रभु! उद्दालक गोत्र के ब्रह्मचारी नचिकेता, मेरे आश्रम में विद्यमान है। और तीन दिवस तीन रात्रि हो गए हैं। हे प्रभु! एक ब्रह्मवेत्ता ब्रह्मचारी यदि हमारे गृह में अन्न जल से पीड़ित रहता है तो ये भगवन् देखो, अभिशाप है हमारे लिए। हम बड़े पापाचार में परणित हो जाएँगे। क्योंकि किसी भी गृह आश्रम में, कोई भी ब्रह्मवेत्ता, अन्न जल से पीड़ित नहीं रहना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, यमाचार्य ने इस वाक्य को स्वीकार किया। और यमाचार्य ने कहा, हे देवी! मैं ब्रह्मचारी को सबसे प्रथम सन्तुष्ट करूँगा। वह बेटा! देखो, यमाचार्य ब्रहे, वह ब्रह्मचारी के समीप पहुँचे। और ब्रह्मचारी से कहा, हे ब्रह्मचारी तुम्हें तीन रात्रि और तीन दिवस हो गए हैं मैं तीन वर देना चाहता हूँ। उन्होंने कहा, प्रभु! सतप्रमाणम् ब्रहे, हे प्रभु! आप जैसा भी उचितम् ब्रहे। मेरे पुत्रों! देखो, यमाचार्य ने जब ये कहा, क्या तीन वचनम् ब्रहे। और उस समय नचिकेता ने कहा, हे प्रभु! मैं सबसे प्रथम वचन में ये चाहता हूँ क्या मेरे पितरों ने, मेरे पितर ने जिस द्रव्य के द्वारा याग किया है। और वह द्रव्यम् ब्रह्मेः मानो देखो, मुझे, मेरे पिता की अभिलाषा पूर्ण हो जानी चाहिए। वह मोक्ष चाहते हैं। आनन्द चाहते हैं। और प्रभु के आनन्दरूपी सागर में रमण करना चाहते हैं। हे प्रभु! उन्हें आप देखो अप्रत कीजिए। मेरे प्यारे! देखो, यमाचार्य ने कहा, हे नचिकेता! तुम्हारे पितरों की

इच्छा पूर्ण हो। मानो उन्होंने तथास्तु कह करके बेटा! वह मौन हो गए। उन्होंने कहा, प्रभु! मैं दूसरा वचन चाहता हूँ कि वह स्वर्ग क्या है। संसार में स्वर्ग किसे कहते हैं। तो मुनिवरों! देखो, यमाचार्य ने कहा, हे नचिकेता! स्वर्ग उसे कहते हैं जो अपनी देखो अग्नियों की पूजा करता है। ये तीन प्रकार की अग्नियाँ विशिष्ट मानी गयी है। जो इन अग्नियों का पूजन करता है वो ही श्रेष्ठ कहलाता है।

गार्हपत्य अग्नि

उन्होंने कहा, सबसे प्रथम अग्नि का नाम, गार्हपत्य नाम की अग्नि कहा जाता है। गार्हपत्य नाम की अग्नि में **ब्रह्मचारी** तपता है। और वह ब्रह्मचारी मानो देखो, गार्हपत्य नाम की अग्नि के द्वारा वह अपने को मानो अपनेपन में ही दृष्टिपात करता रहता है। वह प्रातःकालीन अपने आसन को त्याग देता है। और त्याग करके वह देखो अपनी नाना क्रियाओं से निवृत्त हो करके, और वह मुनिवरों! देखो अपने में अध्ययन करता है। स्वतः अपनेका अपने में अध्ययन करता रहता है। उसी अध्ययन प्रतिक्रिया को हमें विचार में लाना है। मेरे पुत्रों! देखो, नचिकेता ने अमृताम्, यमाचार्य ने नचिकेता से कहा, हे नचिकेता! तुम मानो देखो, गृहपत्य, गार्हपत्य नाम की अग्नि की पूजा करो। जिस अग्नि के द्वारा, **अग्नि कहते हैं** विचारों को। अग्नि कहते हैं मन, मस्तिष्क और देखो हृदय की आभा को जब मानो देखो, अपने में अग्नि को विचारने लगता है। मेरे पुत्रों! देखो, अग्नि कहते हैं प्राण को। अग्नि कहते हैं मुनिवरों! देखो मनस्तत्त्व की धारा को। और अग्नि कहते हैं जो इन्द्रियों का साकल्य है। और अग्नि कहते हैं बेटा! विचार को। जब विचार-विनिमय करता रहता है। मेरे पुत्रों! देखो, सबसे प्रथम वह अपने में देखो उस मन को पवित्र बनाता है। और मन के द्वारा ही देखो प्राणों की आभा का जन्म होता है। और वही मन और प्राण और मुनिवरों! उसके पश्चात् उसके हृदय से उद्गम विचारों की उत्पत्ति होती है। और वही विचार मुनिवरों! देखो दर्शनों के मानवीयत्त्व के कहलाते हैं।

आओ मेरे पुत्रों! देखो, विचार आता रहता है कि इस अग्नि की पूजा करने वाला मानव महान् कहलाता है। वह ब्रह्मवर्चोसी बन जाता है। मेरे पुत्रों! ब्रह्मवर्चोसी कौन कहलाता है, ब्रह्मचारी कौन है। वेद का मन्त्र कहता है **''ब्रह्मम् ब्रव्हे क्रतम् देवात्वाम् ब्रह्मचरिष्यामि''** क्या ब्रह्मचारी वह होता है, जो ब्रह्म की चरि को चरने वाला है। मेरे पुत्रों! देखो, आचार्य कहता है कि ब्रह्म की चरि को कौन चरता है। ब्रह्म की चरि को वो चरने वाला है जो विज्ञानवेत्ता है। और विज्ञानवेत्ता भी जो आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता है। बेटा! देखो, आत्मोन्नति करने वाला अथवा ब्रह्मवर्चोसी का पालन करने वाला, ब्रह्मचारी वह कहलाता है बेटा! देखो, जो एक-एक श्वास को मुनिवरों! देखो अपना एक मनका बना लेता हैं और मनका बना करके वो सूत्र में पिरो देता है। तो वह सूत्रों में परणित होने से बेटा! वो माला बन जाती है। जैसे वेद का उद्गीत गाने वाला प्रत्येक शब्द को माला के सदृश दृष्टिपात करता है। जैसे एक-एक वेद के मन्त्रों की ऋचाओं को ऋचित करता हुआ मुनिवरों! देखो ब्रह्मसूत्र में पिरोना स्वीकार करता है। वही मुनिवरों! देखो माला बन करके रहती है और वही शाश्वत रह करके ब्रह्मचारी को ऊँचा बनाती है।

मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि ने जब ये कहा, हे ब्रह्मचारी! ब्रह्मणेः क्रतम् देवाः, हे ब्रह्मचारी! व्रतम् देवत्वाम्, ब्रह्मचारी कौन होता है। मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि कहता है। ब्रह्मचारी वह है जो चरि, ब्रह्म और चरि को जानने वाला है। ब्रह्म कहते हैं परमपिता परमात्मा को और चरि कहते हैं बेटा! प्रकृति को जो दृष्टिपात आने वाला जगत है। मेरे पुत्रों! देखो, चरि का सूक्ष्मतम् मनस्तत्त्व माना गया है। और वही मनस्तत्त्व है बेटा! जो प्राण के साथ में गमन करता है। और प्राण मेरे पुत्रों! देखो, विचारों में परणित हो जाता है। तो वेद का ऋषि कहता है, **''सम्भवम् ब्रह्मणाः क्रतम् देवाः''** क्या वह ब्रह्मचारी कहलाता है बेटा! जो ब्रह्म की चरि को चरने वाला है। ब्रह्म की चरि को कौन चरता है–ब्रह्मचारी। ब्रह्मचारी कौन है, जो मुनिवरों! देखो, प्रत्येक श्वास का मनका बनाना जानता है और वह ब्रह्मसूत्र में मुनिवरों! देखो अपने को पिरो लेता है।

विचार आता रहता है मेरे पुत्रों! क्या वह देखो, वेद का ऋषि कितनी ऊँची उड़ाने उड़ रहा है। वह कहता है कि तुम, मानो देखो, गार्हपत्य नाम की अग्नि का पूजन करो। जिस अग्नि के पूजन करने से मानव तेजोमयी बन जाता है। और तेज की आभा में परणित हो जाता है। वेद का ऋषि कहता है, ब्राह्मण कौन है। वेदाचार्य कहते हैं, ''ब्रह्मवर्चो सम्भव ब्रव्हे, क्रतम् देवाः'' जो मेरे पुत्रों! देखो, ब्रह्म को अपने में और अपने को ब्रह्म में जो स्वीकार करता है, वही ब्रह्मचारी कहलाता है। मेरे पुत्रों! देखो, ब्राह्मण की विवेचना करते हुए, वेद का ऋषि कहता है कि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने भी इसी प्रकार की विवेचना की है मानो देखो, यही विवेचना मुनिवरों! देखो उद्दालक गोत्र के ऋषियों ने भी इसी प्रकार वर्णन किया। और उस समय गार्हपत्य नाम की अग्नि का पूजन करने वाला ब्रह्मचारी कहलाता है। हे ब्रह्मचारी! हे ब्रह्मवर्चोसी! तू अपने में पालन कर जिससे मानो तेरी ब्रह्मवर्चोसी पूर्णता को प्राप्त हो जाए।

आओ, मेरे पुत्रों! मैं विशेष विवेचना नहीं दूँगा। केवल तुम्हें परिचय देने के लिए आया हूँ। क्योंकि ''ब्रह्माचारः प्रव्हाणम् ब्रव्हे'' मेरे पुत्रों! अपने में प्राण का निदान करता है। और प्राण को अपने में समेट लेता है। वही ब्रह्मवर्चोसी बन जाता है। मेरे पुत्रों! देखो, आगे वेद का ऋषि कहता है ''सम्भूति ब्रह्माः सम्भूति लोकाम्, सम्भूति क्रतम् देवम् लोकाः'' वेद का आचार्य कहता है कि उस महान् देव को हमें विचारना है। मेरे पुत्रों! देखो, द्वितीय अग्नि का नाम गृहपत्य नाम की अग्नि कहलाती है।

यमाचार्य ने कहा, हे नचिकेता! ये स्वर्ग की प्रथम दहली है जो ब्रह्मचर्य मानो देखो, अपने में ब्रह्म का चिन्तन करता हुआ और देवत्व को प्राप्त कर लेता है। जो हिंसा से रहित हो जाता है। हिंसा से जो रहित होता है और अहिंसा में परणित हो जाता है मेरे पुत्रों! देखो, वही देवता कहलाता है।

गृहपत्य अग्नि

विचार आता है कि गृहपत्य नाम की अग्नि का पूजन करने वाला,

अपने में गृहपत्य नाम की अग्नि का पूजन कौन करता है बेटा! गृह आश्रम में रहने वाले पति और पत्नी मानो अपने बाल्य को यदि ऊँचा बनाना चाहते हें, अपने मानो देखो, गृह को स्वर्ग बनाना चाहते हैं तो वह दोनों अपने में परस्पर चर्चाएँ करते रहें। और परस्पर क्या चर्चाएँ, दर्शनों की चर्चा होनी चाहिए। गृहपत्य नाम की अग्नि के पूजन का अभिप्रायः ये है। जैसे बेटा! माता अरुन्धती और महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज, रात्रि काल में बेटा! देखो, चिन्तन करते रहते थे। और लोक-लोकान्तरों की उड़ाने उड़ते रहते थे। एक समय बेटा! माता अरुन्धती ने, महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज से ये कहा, क्या महाराज! ये पृथ्वी क्या है? उन्होंने कहा, ये पृथ्वी गुरुत्व है। और ये मानो देखो, संसार को अपने में धारण करने वाली है। वेद का ऋषि कहता है ''वसुन्धरम् ब्रह्मणाः क्रतम्'' ये पृथ्वी वसुन्धरा है। जो अपने में मानो देखो, धारण कर रही है। मुनिवरों! माता अरुन्धती ने कहा, चलो भगवन्! ये भी वाक्य मैंने स्वीकार कर लिया। परन्तु ये लोक-लोकान्तरों की माला एक-दूसरे में पिरोया हुआ जगत है। जैसे ये मानो समाज, एक-दूसरे में पिरोया हुआ है। जैसे माता का पुत्र, माता में पिरोया हुआ है। और पुत्र में माता पिरोयी हुई है। इसी प्रकार मुनिवरों! जैसे पितरगण, देखो ब्रह्मचारी अपने में पिरो लेते हैं पुत्रवत् बन करके, इसी प्रकार मेरे पुत्रों! जैसे प्राणी, प्राणी में पिरोया हुआ है। ये पृथ्वी जैसे सूर्य में पिरोयी हुई है और सूर्य गन्धर्व में पिरोया हुआ है। और गन्धर्व, मानो देखो, जैसे ध्रुव में पिरोया हुआ है। और ध्रुव, मुनिवरों! देखो पुष्प नक्षत्र में पिरोया हुआ है। और पुष्प, मुनिवरों! देखो, रोहिणीकेतु मण्डल में पिरोया हुआ है। इसी प्रकार, मुनिवरों! देखो, ये जगत एक-दूसरे में पिरोया हुआ है। जैसे आचार्य में ब्रह्मचारी पिरोया जाता है और ब्रह्मचारी मेरे पुत्रों! देखो, ''आचार्य सुवप्रव्हे, देखो ब्रह्मवर्णम् ब्रव्हे क्रतम'' देखो आचार्य ब्रह्मचारी में और ब्रह्मचारी आचार्य में, एक-दूसरे में पिरोया हुआ सा बेटा! ये जगत दृष्टिपात आता रहता है। मुनिवरों! देखो, एक-दूसरे में चेतनाबद्ध रहने वाला ये जगत अपने में अपनेपन को ही दृष्टिपात करता रहता है।

मेरे पुत्रों! देखो, ऋषि ने ये कहा कि गार्हपत्य नाम की अग्नि का अभिप्रायः ये है, क्या गृहपत्य नाम की अग्नि में प्रवेश हो जाए। और गृहपत्य नाम की अग्नि क्या है। जब माता-पिता अपने गृह में ऊँचे विचार बनाते हैं। और वह अपने में परस्पर दर्शनों की चर्चाएँ परमात्मा की विवेचना में रत्त रहते हैं। और वो ब्रह्म याग करते हैं तो उनके यहाँ देखो बसने वाले ब्रह्मचारी अथवा ब्रह्मचारिणी, पुत्र-पुत्रियाँ, मुनिवरों! देखो, सर्वत्र पवित्रता को प्राप्त हो जाते हैं। मेरे पुत्रों! देखो, अपने में ही वो दृष्टिपात होने लगते है। विचार आता रहता है, मैं विशेषता में, तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ। विचार तो बेटा! बड़े ऊर्ध्वा में गमन करते रहते हैं। माता अरुन्धती ने ये कहा, वशिष्ठ से क्या हे ब्रह्मणेः मानो देखो, ये अपने में मात्राएँ क्या हैं? उन्होंने कहा, मात्राएँ अपने में ही अपने मानो लोक-लोकान्तरों की प्रतिभा में जो मात्राएँ कटिबद्ध रहती हैं। जिससे मुनिवरों! देखो, उनका जीवन पवित्रता को प्राप्त हो जाता है। आओ मेरे पुत्रों! देखो, विचार आता रहता है, ''अभ्यम् ब्रह्मणाः अभ्यम् लोकाः अभ्यम् रुद्राः''। मेरे पुत्रों! देखो, वेद के ऋषि ने कहा है, हे देवी! अमृता को प्राप्त करने वाला ही महान् है। तो मुनिवरों! यहाँ आचार्य ने कहा, हे नचिकेता! देखो जब मैं वशिष्ठ मुनि महाराज के आश्रम की विचारधाराएँ या उनके दोनों ऋषित्व की चर्चा करते हुए जब मैं तुम्हारे समीप आता रहता हूँ तो मेरा अन्तर्हृदय पवित्रता की आभा में रत्त हो जाता है। इसीलिए मैं ये कहा करता हूँ, क्या गृहपत्य नाम की अग्नि का पूजन होना चाहिए। अग्नि का अभिप्रायः ये है, विचार है, यही अग्नि, मुनिवरों! देखो, भयङ्कर बन करके रहती है। यही अग्नि जब गृहपत्य नाम की अग्नि का पूजन, जब विद्यालयों में प्रवेश होता है तो आचार्य तपों में जब निष्ठ हो जाता है। तो मुनिवरो! ब्रह्मचारी उसके तप की प्रशन्सा करते हैं और उसके चरणों की वन्दना करके अपने को महान् बनाते हैं। यही अग्नि, मुनिवरों! देखो, जब आचार्य कुल में प्रवेश, देखो जब ये अग्नि आर्युवेदाचार्यो के कुल में प्रवेश करती है। यही अग्नि बेटा! देखो, पचासी प्रकार की अग्नि बन करके रहती है। यही

अग्नि जब मुनिवरों! देखो, वैज्ञानिकों के युग में प्रवेश करती है तो वैज्ञानिकजन इसका मन्थन करते हैं तो बेटा! यह अग्नि अरबों-खरबों प्रकार की धाराओं में परणित हो जाती है। यही अग्नि बेटा! अणु और परमाणु में रत्त हो जाती है। यही अग्नि जब विज्ञानवेत्ता मुनिवरों! देखो एक-एक परमाणु का जब विभाजन करते हैं तो उसमें विभक्त हो के बेटा! देखो, ब्रह्माण्ड उसमें दृष्टिपात आने लगता है। तो विचार आता रहता है, जब मानव देखो अपने में अन्वेषण करता है, अपने में जब अनुसन्धान करता है तो देखो अपने में ही इस अग्नि का पूजन करता है। यही अग्नि बेटा! देखो, ब्रह्माग्नि बन करके रहती है। यही अग्नि पाण्डित्व की आभा में रत्त हो करके मुनिवरों! देखो सत्य में रमण करने वाली है। तो जब हम मुनिवरों! देखो इन अग्नियों का पूजन करने लगते हैं तो बेटा! ये अग्नि महानता में परणित हो जाती है।

तप का स्वरूप

वेद का ऋषि कहता है, ''तपम् हिरण्यम् तपः प्रव्हाः''। ये सर्वत्र मानो देखो, जगत एक तपोमयी दृष्टिपात आता रहता है। इसीलिए मानव को तपस्वी होना चाहिए। ब्रह्मचारी जब अपने विद्यालय में तपता है और वह अपने जीवन को क्रियात्मक बना लेता है तो बेटा! राष्ट्र ऊर्ध्वा में गमन करने लगता है। जैसे विद्यालयों में ब्रह्मचारियों के समीप देखो आचार्यजन तपे हुए होने चाहिए। ऐसे राष्ट्र का संचालन करने के लिए राष्ट्रीय प्रतिभा में रत्त रह करके राष्ट्र को तपस्वी होना चाहिए। और तप किसे कहते हैं बेटा! जब अपने मानवीय राष्ट्र को जो ऊँचा बना लेता है। अपने शरीररूपी जो हमारा राष्ट्र है, उसको जब वो प्राण के माध्यम से विचार के और मन को एकाग्र करता हुआ, जब ऊँचा बना लेता है तो बेटा! राष्ट्र पवित्र बन करके रहता है।

आज मैं तुम्हें विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ। विचार केवल ये कि मानव को तपस्वी बनना चाहिए। **''तपम् गतम् ब्रह्माः तपो हिरण्यम् रथ**

प्रव्हाः वाचन्नमम् बव्हे तपाः''। वेद का ऋषि कहता है जो मानव मन, वचन, कर्म से जो तपस्वी होता है। मन, वचन, कर्म से जो बेटा! ऊर्ध्वा में गमन करता है। अरे! वही तो **वशिष्ठ** कहलाता है। वही अपने राष्ट्र को, समाज को ऊँचा बनाता है।

आओ मेरे पुत्रों! देखो, विचार क्या, जो गृहपत्य नाम की अग्नि का पूजन करता है वो गृह में प्रदीप्त रहने वाली अग्नि है। अरे! विचारों की अग्नि गृहों में प्रदीप्त रहती है। यही अग्नि मुनिवरों! देखो, वह विद्यालय गृह है, उसमें भी ये प्रदीप्त रहती है। तो इसीलिए हमें विचारना है कि हम अपने में तपस्वी बन करके गमन करने वाले बने। और माता वसुन्धरा के प्रति हमारी देखो निष्ठा होनी चाहिए। वसुन्धरा उसे कहते हैं जिसके गर्भ में बेटा! देखो, हम सदैव वशीभूत रहते हैं। माता का नाम वसुन्धरा है। देखो परमात्मा का नाम भी वसुन्धरा है। इस पृथ्वी का नाम भी वसुन्धरा है। और मानो देखो, जिस विद्या का हम अध्ययन करते हैं। जिस विद्या से हमारे जीवन का विकास होता है। जिस विद्या से हम ज्ञान और विज्ञान में रत्त रहते हैं। जिस विद्या के द्वारा देखो हम आध्यात्मिक विज्ञान और भौतिक विज्ञान, दोनों में प्रविष्ठ हो जाते हैं। मेरे पुत्रों! वही तो विज्ञान विशिष्ट कहलाया गया है। उसी विज्ञान में जब हम रत्त हो जाते हैं तो बेटा! हमारा मानवीय जीवन पवित्रता को धारण करने लगता है। तो मुनिवरों! देखो वसुन्धरा का अभिप्रायः क्या। क्या जिसके गर्भ में हम वशीभूत रहते हैं। जैसे मुनिवरों! परमपिता परमात्मा का ये ब्रह्माण्ड है ये लोक-लोकान्तरों वाला है। एक-दूसरे में माला को प्रविष्ट करने वाला ये जगत है। ये परमात्मा का गर्भाशय कहलाता है। और जब इससे पृथक् होते हैं तो माता के गर्भ में, जननी के गर्भ में प्रविष्ट हो जाते हैं। माता अपने में धारण करने वाली है। वह धारयामि कहलाती है। वसुन्धरा कहलाती है। वही वसुन्धरा बेटा! देखो, जब माता के गर्भ से ये मानव पृथक् होता है तो मुनिवरों! देखो, इस पृथ्वी माता की गोद में आ जाता है। हे माँ! तू कैसी वसुन्धरा है। तू नाना प्रकार के खाद्य पदार्थों को हमें प्रदान करती रहती है। हम तेरे में

ही विज्ञान को दृष्टिपात करते हैं। वहीं प्रभु की महानता को दृष्टिपात करते रहते हैं। क्योंकि तू नाना प्रकार का खाद्य और खनिज पदार्थ जब प्रदान करती है, जब वैज्ञानिक बन करके तेरे गृह में प्रवेश करते हैं, तो मानो नाना प्रकार के खनिजों को प्रदान करने वाली है। और उसी खनिज के द्वारा देखो हमारा जीवन उद्बुद्ध होने लगता है। राष्ट्र और समाज सब पवित्र बन जाता है। हमारा विद्यालय भी पवित्र उसी के द्वारा बनता है। जब तक मुनिवरों देखो, विद्यालयों में ब्रह्मचारी, मुनिवरों! देखो यान के द्वारा रमण करके अन्तरिक्ष की यात्रा नहीं कर पाते, विद्यालय कदापि सफलता को प्राप्त नहीं होता।

मुझे वो काल स्मरण आता रहता है। वसुन्धरा की विवेचना करने वाले बेटा! तत्व मुनि महाराज, एक समय बेटा! ब्रह्मचारियों को अध्ययन करा रहे थे। हे ब्रह्मचारियों! तुम्हें मानो देखो, अपनी आभा में परणित हो जाना है। और तुम्हारे यहाँ, जहाँ ये परमाणु विद्या है, इस परमाणु विद्या के ऊपर अध्ययन करो। जहाँ तुम्हारी आध्यात्मिक विद्या है इसका भी अध्ययन करो। परन्तु आध्यात्मिकवाद और भौतिक विज्ञान दोनों का समन्वय हो करके, मेरे पुत्रों! देखो, ब्रह्मचारी जब विद्यालयों में अपने यन्त्रों के द्वारा मुनिवरों! लोक-लोकान्तरों की यात्रा करने वाले हों बेटा! राष्ट्र और समाज उसी काल में ऊँचा बनता है। और कर्त्तव्यवाद में निश्चित होने चाहिए। ये है बेटा! देखो विचार, जो वेद का ऋषि अपने में विचार दे रहा है। क्या ये वसुन्धरा के गर्भ में नाना प्रकार का ज्ञान और विज्ञान निहित रहता है। बेटा! मुझे स्मरण आता रहता है, महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ, जब ब्रह्मचारीजन बेटा! अपने में विद्यमान हो करके ये पृथ्वी के गर्भ में पहुँचे है तो पृथ्वी के गर्भ में बेटा! जो नाना प्रकार का खनिज है अथवा खाद्यान्न है इसके ऊपर अन्वेषण करने वाले ब्रह्मचारीजन, मानो देखो, अपने में, अपनी वृत्तियों को रत्त करके उसके गर्भ में प्रवेश हो जाते हैं। और इसके गर्भ में बेटा! देखो, मुझे स्मरण है, भारद्वाज मुनि के यहाँ ऐसे-ऐसे यन्त्र विद्यमान थे, जो बेटा! पृथ्वी के दस-दस योजन के खनिजों को जानने वाले ब्रह्मचारी

थे। बेटा! देखो, विज्ञान अपनी आभा में उड़ाने उड़ता रहा है। मैं तुम्हें विज्ञान में ले जाना नहीं चाहता हूँ। विचार केवल यह कि मुनिवरों! देखो गृहपत्य नाम की अग्नि का पूजन होना चाहिए। और गृहपत्य नाम की अग्नि का जो पूजन करने वाला है वही मेरे प्यारे! देखो, अपने में **वशिष्ठ** कहलाता है। वही ऊर्ध्वा में गमन करने वाला है। तो मेरे पुत्रों! देखो, विद्यालयों में जब ब्रह्मचारियों के समीप आचार्यजन विद्यमान हो करके उनकी जिज्ञासाएँ उनका आत्म देखो उसको आत्मा का बोध कराना, ब्रह्मचर्य व्रतों का पालन करते हुए ब्रह्मचरिष्यामि बनना और विज्ञान की अनुभूति कराना, बेटा! ये मानो देखो, तपस्वियों का कर्त्तव्य कहलाता है।

वेद का ऋषि कहता है, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा, हे ब्रह्मचारियों! वेद कहता है **"तपम् हिरण्यम् तपाः तपम् चरिष्यम ब्रह्माः तपोः"**। क्या हे ब्रह्मचारियों! तुम तपस्वी बनो। और तपस्वी कौन कहलाता है, जो आत्म ब्रह्मेः आत्मता आत्मा का चिन्तन करने वाला है। ब्रह्मचर्य व्रतों का पालन करने वाले ब्रह्मचरिष्यामि। क्योंकि परमपिता परमात्मा वो ब्रह्म है और चरि प्रकृति को कहते हैं। जो ब्रह्म और चरि के ऊपर, दोनों के ऊपर विचार-विनिमय करता है अथवा चरि को जानता है, ब्रह्म में उसको समेट लेता है और दोनों को मुनिवरों! देखो, ब्रह्मचरिष्यामि बन करके, वही तो महान् कहलाता है।

आओ मेरे पुत्रों! मैं तुम्हें विशेष विवेचना देने नहीं आया हूँ। विचार केवल यह कि हमारे यहाँ बेटा! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के विद्यालय में, ब्रह्मचारियों को जब इस प्रकार का विचार क्रियात्मक किया जाता है तो बेटा! वह विचार एक पवित्र महानता में गमन करने वाला है। आओ मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मचारिजन, जब आचार्यों के समीप विद्यमान हो करके, उनके चरणों की वन्दना करते हुए महानता में गमन करते हैं, मेरे पुत्रों! देखो, वही तो एक महान् क्रियाकलाप कहलाता है। तो विचार देते हुए, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा है क्या "ब्रह्मणाः ब्रहे क्रतम् वेदाम् भवितम् ब्रह्मेः"।

वेद का ऋषि कहता है कि ब्रह्मचरिष्यामि बनो और मानो तुम्हारा कण्ठ विद्या से सजातीय हो। गृहपत्य नाम की, गार्हपत्य नाम की अग्नि का पूजन किया जाए जिससे तुम्हारी मानवता, मानो लोक-लोकान्तरों में गमन करने वाली हो। और तुम मानो देखो, ''शिक्षामम् ब्रहे व्रतम् देवाः'' बेटा! ये महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज, प्रातःकालीन बेटा! यह शिक्षा देते रहे हैं। अपने में अपनेपन को विचारते रहे हैं और स्वयँ तप में जो परणित हो जाता है बेटा! ये जगत अपने में तपस्वी बन करके और अपने ही कर्त्तव्य का पालन करके संसार सागर से पार हो जाता है।

ये है बेटा! आज का वाक्। **आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः** ये कि हम परमपिता परमात्मा की महती का सदैव गुणगान गाते रहें। और उसके ज्ञान और विज्ञान को विचारते रहें। क्योंकि वह परमपिता परमात्मा विज्ञानवेत्ता है। वह विज्ञान में रत्त रहने वाला है। इसीलिए हम परमपिता परमात्मा की महती आनन्दमयी धारा को विचारते हुए इस संसार सागर से पार हो जाएँ।

ये है बेटा! हमारा वाक्। क्योंकि **हमारे मन-मस्तिष्क में जब संसार की प्रतिभा निहित रहती है वही तो महान् और क्रियात्मकता का जीवन मानो देखो, प्रियता को प्राप्त होता रहता है।** ये आज का विचार समाप्त। अब वेदों का पठन-पाठन होगा, इसके पश्चात् वार्त्ता समाप्त हो जाएगी।

वेद पाठ .....

दिनाँक : 13 फरवरी, 1990
स्थान : ग्राम कैथवाड़ी, मेरठ

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. महापुरुषों से हमें एक महान् जीवन शक्ति प्राप्त होती है।
2. मानव का निर्माण उसकी भावनाओं से होता है।
3. जब चरित्रवाद नहीं होता और प्रजा पर अनुशासन करना चाहता है तो असम्भव है।
4. मनु महाराज की लगभग साढ़े सात हजार प्रणालियों ने केवल अपने चरित्र के आधार पर राज्य किया।
5. परमात्मा का जो नियम है उस नियम के आधार से लोक-लोकान्तरों की परिक्रियाएँ चलती हैं।
6. पाखण्ड वहाँ होता है जहाँ मानव में स्वार्थ होता है, सङ्कुचित विचार होते हैं।
7. जहाँ धर्म की पूजा न हो करके लक्ष्मी को अधर्म में लगाया जाएगा तो यह लक्ष्मी स्वयँ मानव के द्वार से चली जाएगी।
8. ब्राह्मण को तो अपनी पोथी और वेद को नहीं त्यागना चाहिए।
9. मानव भौतिक विज्ञानवेत्ता हो तो आध्यात्मिकवेत्ता भी होना चाहिए।
10. जब हृदय प्रसन्न होता है तो जानो कि परमपिता परमात्मा की अनुपम कृपा है।
11. धर्म वही कहलाता है जहाँ देखो प्रेरणा, तरङ्ग उत्पन्न हों और वह ज्यों का त्यों कार्य करती चली जाएँ।
12. जहाँ संस्कारों से बिखरे रहते हैं वहाँ पाप है, जहाँ संस्कारों से कटिबद्ध हो गए वहाँ पुण्य हो जाता है।
13. जहाँ अग्नेय होता है वहाँ सतोगुण होता है।
14. सतोगुण की तीन मात्राएँ हैं प्रभु, प्रकृति और आत्मा। तीनों सत्य हैं।
15. ज्ञानी राजा उस काल में बनता है जब प्रत्येक इन्द्रिय से सुगन्धि उत्पन्न होने लगती है।
16. विज्ञान से मानव बहुत निकट आ गया है परन्तु हृदय से दूर चला गया है।
17. सर्वस्व संसार में पाँच प्रकार के कर्म होते हैं—व्यापक, आकुञ्चन, ऊर्ध्वा, ध्रुवा और क्रिया।

।। ओ३म् ।।

वियोग

श्री सुमन कुमार वैदिक

परमपिता परमात्मा की सृष्टि का याग सहज भाव से सुचारू रूप में निरन्तर गतिशील है जिसमें प्रकृति और आत्मा के क्रियाकलाप का अद्भुत दर्शन हो रहा है। मानव प्रारम्भ से ही इस याग के अन्वेषण में संलग्न है उस याग में आत्मा अपने उत्थान के लिए आवागमन के चक्र में निरन्तर प्रयास में प्रयत्नशील रहती है। इसी क्रम में श्री सुमन कुमार शर्मा जी निवासी ग्रेटर नोएड़ा, उत्तर प्रदेश की आत्मा अपने नश्वर शरीर को त्याग कर हम सब के मध्य से आकस्मिक दिनाँक 18 अगस्त, 2020 को अपने लोक को गमन कर गई। जिससे कि वैदिक समाज को गहन क्षति हुई है और जिससे सभी समाज संतप्त है।

श्री शर्मा जी अपने जीवन काल में सेवारत रहते हुए भी पूज्यपाद-गुरुदेव के साहित्यिक प्रकाशन कार्य में अपनी आहुति प्रदान करते हुए और भी अन्य वैदिक सस्थाओं में तन मन धन से निरन्तर संलग्न रहे। यज्ञ प्रचार, प्रसार के लिए ग्रेटर नोएड़ा में एक समिति का गठन करके आर्य समाज के सहयोग से यज्ञों की गति को ऊर्ध्वा में प्रकाशमान करने का अथक प्रयास किया। अपने को वैदिकता में विलय करने के लिए अपने नाम के साथ ''शर्मा'' के स्थान पर ''वैदिक'' का प्रयोग करने लगे।

वैदिक कार्यों में संलग्न अत्यन्त कर्मठ आत्मा के वियोग से सभी वैदिक समाज को उनकी क्षति की गहन वेदना है। ऐसी विषम परिस्थिति में संतप्त परिवार को क्षति सहन करने की शक्ति प्रदान करने के लिए समिति परमपिता परमात्मा प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

*1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	110.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	110.00
*3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	120.00
*4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	120.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	60.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	100.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	40.00
8.	आत्म-लोक	45.00
*9.	धर्म का मर्म	50.00
10.	शंका-निवारण	40.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्त्व	50.00
12.	आत्मा व योग-साधना	40.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	150.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	150.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	140.00
17.	रामायण के रहस्य	45.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	50.00
19.	महाभारत के रहस्य	35.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	45.00
21.	रावण-इतिहास	65.00
22.	महाराजा-रघु का याग	35.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	40.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	40.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	45.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	40.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	45.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	50.00
29.	याग-मन्जूषा	45.00
30.	आत्म-दर्शन	35.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	40.00
32.	याग और तपस्या	70.00
33.	यागमयी-साधना	45.00
34.	यागमयी-सृष्टि	40.00
35.	याग-चयन	50.00
36.	दिव्य-रामकथा	150.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	50.00
38.	दिव्य-ज्ञान	45.00
39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	140.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	45.00
41.	आत्म-उत्थान	45.00
*42.	तप का महत्त्व	50.00
43.	अध्यात्मवाद	45.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	45.00
45.	वैदिक-प्रभा	40.00
46.	प्रकाश की ओर	40.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	45.00
48.	वैदिक-विज्ञान	40.00
49.	धर्म से जीवन	40.00
50.	आत्मा का भोजन	45.00
51.	साधना	40.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	45.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	45.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	110.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	50.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	110.00
57.	माता मदालसा	60.00
*58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	110.00
*59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	110.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	110.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	110.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	110.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	110.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएँ	60.00
65.	प्रभु-दर्शन	60.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	110.00
*67.	समाज उत्थान का मार्ग	60.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	110.00
*69.	ब्रह्म की ओर	60.00
*70.	ईश्वर मिलन	60.00
*71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	110.00
*72.	यौगिक प्रवचन माला भाग-16	110.00
*73.	नैतिक शिक्षा	60.00
*74.	यौगिक प्रवचन माला भाग-17	110.00
*75.	आत्मिक ज्ञान	60.00
*76.	यौगिक प्रवचन माला भाग-18	120.00
*77.	यज्ञ विज्ञान	100.00
*78.	यौगिक प्रवचन माला भाग-19	120.00
	पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज एवम् कर्मभूमि लाक्षागृह	10.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

मासिक सहयोग

सु. कुमारी नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली– स्मृति–श्रीमति शान्ति अबरोल व श्री देवराज अबरोल	1001 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री ज्ञानेश द्विवेदी	1000 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	501 रुपये
श्री कर्ण तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्रीमती रुचिका तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	500 रुपये
श्री संजय उर्फ टीटू त्यागी सुपुत्र श्री ओमदत्त त्यागी, तलहटा	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
श्री अरुण तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	251 रुपये
श्रीमती सुखमणी तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	251 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री कृष्ण लाल बत्रा, इन्द्री, जिला करनाल	201 रुपये
मास्टर कवन्धि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज, दिल्ली	101 रुपये
कुमारी अञ्जलि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सात्विक त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज, दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये
कुमारी प्रीक्षा त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये

मासिक सहयोग का आह्वान

सभी श्रद्धालु एवम् उदार दानदाताओं के सहयोग से समिति के प्रकाशन का कार्य निरन्तर ऊर्ध्वा गति को प्राप्त हो रहा है उसी सहयोग की गरिमा को सुदृढ़ रूप से चिरस्थायी बनाए रखने के लिए आपका अनुदान निरन्तर प्राप्त होता रहे ऐसी आप सभी से समिति विनम्र भाव से प्रार्थना करती है और नए मासिक सहयोगियों को भी अपनी आहुति इस जनकल्याण के कार्य में प्रदान करने की अपेक्षा करती है। **वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

प्रत्येक मानव, प्रत्येक देव कन्या आनन्द को चाहता है, सुख को चाहता है परन्तु यह सुख कहाँ प्राप्त होता है? सुख हमें उसी काल में मिलता है जब हम सुख स्वरूप प्रभु को जान लेते हैं, ज्ञानमय आनन्द को जान लेते हैं, जिस ज्ञान-विज्ञान की महिमा को गाते हुए हमारे ऋषि-मुनियों ने भिन्न-भिन्न रूपों में अनेक अलंकारों में उस परमात्मा को अङ्कित किया। आज हमें परमपिता परमात्मा को अपने हृदय में अङ्कित कर लेना है, उस परमात्मन् इन्द्र को कल्याणकारी जान करके अपने मानवत्व को पवित्र बना लेना है।

हे परमात्मन्! तू कल्याण कर हमें ज्ञान और विज्ञान के शिखर पर ले जा।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 48 : अंक : 572
सितम्बर 2020

मूल्यः
पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R.No. DL (S)-20/3220/2018-2020
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2018-2020
POSTED AT KRISHNA NAGAR HP.O. N.D. ON 10/11-9-2020
Published on 5th day of the same month